भारत में प्लास्टिक पार्क - पॉलिमर-आधारित औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र का विकास तीव्र करना

1. परिचय

- भारत सरकार ने रसायन और पेट्रो-रसायन विभाग के तहत नई पेट्रोकेमिकल्स योजना के तहत प्लास्टिक पार्क स्थापित करने की योजना लागू की है। इस योजना का उद्देश्य आवश्यकता आधारित प्लास्टिक पार्कों की स्थापना करना है, जो अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और साझा सुविधाओं से सुसज्जित हों। इन पार्कों का उद्देश्य प्लास्टिक प्रसंस्करण उद्योग की क्षमताओं को समेकित करना, निवेश, उत्पादन और निर्यात में वृद्धि करना और रोजगार के नए अवसर उत्पन्न करना है। इस योजना के तहत भारत सरकार परियोजना लागत का 50% तक अनुदान सहायता प्रदान करती है, जिसकी अधिकतम सीमा ₹40 करोड़ निर्धारित की गई है।

2. प्लास्टिक पार्कों का महत्व

- प्लास्टिक पार्क एक औद्योगिक क्षेत्र होते हैं, जो विशेष रूप से प्लास्टिक से संबंधित व्यवसायों और उद्योगों के लिए बनाए जाते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य:
- • प्लास्टिक प्रसंस्करण उद्योग की क्षमताओं को समेकित करना।
- • निवेश और निर्यात को बढ़ावा देना।
- • रोजगार सृजन करना।
- • पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ विकास को बढ़ावा देना, विशेष रूप से प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन और पुनर्चक्रण के माध्यम से।

- 3. प्लास्टिक पार्कों की स्वीकृति और निर्माण
- अब तक भारत में विभिन्न राज्यों में कुल 10 प्लास्टिक पार्कों को मंजूरी दी गई है। उदाहरण के लिए:
- • तामोट, मध्य प्रदेश (2013) - परियोजना लागत ₹108.00 करोड़, अनुदान ₹40.00 करोड़।
- • जगतसिंहपुर, ओडिशा (2013) - परियोजना लागत ₹106.78 करोड़, अनुदान ₹40.00 करोड़।
- • तिनसुकिया, असम (2014) - परियोजना लागत ₹93.65 करोड़, अनुदान ₹40.00 करोड़।
- पिछले पांच वर्षों के दौरान इन पार्कों को जारी की गई धनराशि का विवरण भी महत्वपूर्ण है।

4. पृष्ठभूमि और उद्देश्य

- विश्व बैंक के 2022 के अनुमान के अनुसार, भारत प्लास्टिक के विश्व निर्यात में 12वें स्थान पर है। इसके पीछे भारत सरकार की योजनाओं और निरंतर प्रयासों का बड़ा योगदान है। जैसे कि प्लास्टिक पार्क का निर्माण और अन्य निवेश गतिविधियाँ। रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग ने क्लस्टर विकास के माध्यम से भारत की प्लास्टिक उत्पादन और निर्यात क्षमता बढ़ाने के लिए यह योजना तैयार की है।

इस योजना के मुख्य उद्देश्य हैं:

- प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना: घरेलू प्लास्टिक प्रसंस्करण उद्योग में प्रतिस्पर्धात्मकता और मूल्य संवर्धन क्षमता को बढ़ाना।
- क्षमता और उत्पादन में वृद्धि: बेहतर बुनियादी ढांचे के निर्माण से निवेश बढ़ाना और उत्पादन क्षमता को बढ़ाना।
- पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ विकास: अपशिष्ट प्रबंधन, पुनर्चक्रण, और अन्य पर्यावरणीय उपायों के माध्यम से टिकाऊ विकास प्राप्त करना।

5. प्लास्टिक पार्क स्थापित करने की प्रक्रिया

- प्लास्टिक पार्कों की स्थापना के लिए रसायन और पेट्रोरसायन विभाग राज्य सरकारों से प्रस्ताव आमंत्रित करता है। इस प्रक्रिया में राज्य कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPR) प्रस्तुत की जाती है, जिसे योजना संचालन समिति द्वारा अनुमोदित किया जाता है। उदाहरण के लिए, जुलाई 2022 और जनवरी 2022 में गोरखपुर, उत्तर प्रदेश और गंजीमठ, कर्नाटक में प्लास्टिक पार्कों की स्थापना को मंजूरी दी गई।

6. प्लास्टिक पार्कों के लिए अनुदान सहायता

- भारत सरकार प्लास्टिक पार्कों की स्थापना के लिए अनुदान सहायता प्रदान करती है। इस योजना का उद्देश्य स्थिर और पर्यावरण-मित्र औद्योगिक इकाइयां स्थापित करना है, जिसमें अपशिष्ट उपचार संयंत्र, ठोस/खतरनाक अपशिष्ट प्रबंधन, और प्लास्टिक रीसाइक्लिंग की सुविधाएं शामिल हैं। कुछ प्लास्टिक पार्कों ने इन-हाउस रीसाइक्लिंग शेड भी स्थापित किए हैं।

7. भारत में प्लास्टिक उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अन्य सरकारी पहल

- भारत सरकार ने प्लास्टिक प्रसंस्करण को बढ़ाने के लिए अन्य कई पहल की हैं:
- • उत्कृष्टता केन्द्र (सीओई): पॉलिमर और प्लास्टिक में अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के लिए 13 उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए गए हैं।
- • कार्यबल कौशल विकास: केंद्रीय पेट्रोकेमिकल इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा प्लास्टिक प्रसंस्करण और प्रौद्योगिकी में कौशल विकास के लिए कई पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।
- • पर्यावरणीय स्थिरता: प्लास्टिक कचरे के निपटान, पुनर्चक्रण और पुनर्नवीनीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

8. निष्कर्ष

- भारत में प्लास्टिक पार्कों की योजना न केवल प्लास्टिक प्रसंस्करण क्षेत्र में निवेश और रोजगार सृजन को बढ़ावा देती है, बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता और पुनर्चक्रण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी है। सरकार की यह पहल भारत को वैश्विक प्लास्टिक व्यापार में एक प्रमुख खिलाड़ी बनाने में मदद करेगी, साथ ही इसे टिकाऊ और नवाचार-आधारित बनाए रखेगी। इस योजना के माध्यम से भारत अपनी उत्पादन और निर्यात क्षमता को बढ़ाने, पर्यावरणीय मानकों को सुधारने और उद्योग में नई संभावनाओं को पैदा करने में सक्षम होगा।